www.e-prepation.com

PSC ACADEMY

समाजशास्त्र

By RAKESH SAO

CGPSC MAINS

www.e-prepation.com

व्यक्ति एवं समाज

- प्रस्थिति (Status)
- भूमिका (Role)
- सामाजिक अंत:क्रिया (Social Interaction)
- संस्कृति (Culture)
- व्यक्तित्व (Personality)
- समाजीकरण (Socialization)

व्यक्ति एवं समाज

प्रस्थिति (Status)

- वीरस्टीड : "प्रस्थिति व्यक्ति का समाज में **पद का सूचक** है |"
- रॉल्फ लिण्टन : "सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत किसी व्यक्ति को एक समय में जो स्थान प्राप्त होता है उसी को उस व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति कहते है |
- **सामान्य शब्दों में**
  - प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पहचान होती है | उसकी एक हैसियत होती है | इसी पहचान या हैसियत को प्रस्थिति कहते है |
  - यह पद व्यक्ति को या तो स्वत: मिलता है या व्यक्ति अपने गुणों या योग्यता के आधार पर समाज में अर्जित करता है |
  - एक व्यक्ति की प्रस्थिति सदैव दूसरे व्यक्ति की तुलना में ही होती है |
- उदाहरण : शिक्षक – छात्र , पिता – पुत्र , मंत्री , सचिव

प्रस्थिति के प्रकार

क्र.	मुख्य बिंदु	प्रदत्त प्रस्थिति	अर्जित प्रस्थिति
1	परिभाषा	वह प्रस्थिति जो व्यक्ति को जन्म के साथ प्राप्त होती है		वह प्रस्थिति जो व्यक्ति अपनी क्षमता से अर्जित करता है	
2	प्रयास	इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कोई प्रयास नहीं करना पड़ता है		इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को प्रयास करना पड़ता है	
3	उदाहरण	धर्म , जाति , गोत्र , लिंग , रिश्तेदारी	पति – पत्नी , माता – पिता , संपत्ति , व्यवसाय , शिक्षा , विवाह , राजनीतिक पद , नौकरी

भूमिका (Role)

- वीरस्टीड : "भूमिका प्रस्थिति से संबंधित कार्यों के निर्वाह से है |"
- इलियट : "भूमिका वह कार्य है जिसे व्यक्ति प्रस्थिति के अनुसार निभाता है |"
- **सामान्य शब्दों में**
  - प्रस्थिति धारण करने के कारण समाज व्यक्ति से जिस प्रकार के कार्य की अपेक्षा करता है , वहीँ भूमिका कहलाती है |
  - भूमिका प्रस्थिति का गतिशील एवं व्यवहारिक पहलू है |
- उदाहरण

क्र.	प्रस्थिति (पद)	भूमिका (कार्य)
1	शिक्षक	छात्रों को पढ़ाना
2	वकील	वकालत
3	चिकित्सक	चिकित्सा

भूमिका के प्रकार

क्र.	मुख्य बिंदु	प्रदत्त भूमिका	अर्जित भूमिका
1	परिभाषा	वह भूमिका जो व्यक्ति को जन्म के साथ प्राप्त होती है |	वह भूमिका जो व्यक्ति अपनी क्षमता से अर्जित करता है |
2	प्रयास	इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कोई प्रयास नहीं करना पड़ता है |	इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को प्रयास करना पड़ता है |
3	उदाहरण	गोत्र अनुसार विवाह	छात्रों को पढ़ाना

भूमिका की विशेषताएं

क्र.	विशेषताएं	विवरण
1	प्रस्थिति से संबंध	भूमिका का संबंध प्रस्थति से होता है |
2	निर्धारण	भूमिका का निर्धारण **संस्कृति एवं सामजिक मानदंडों** के आधार पर होता है |
3	मुख्य एवं सामान्य भूमिका	प्रत्येक व्यक्ति समाज में अनेक भूमिकाएं निभाता है , किन्तु जिस भूमिका के कारण उसे समाज में पहचान मिलती है वह उसकी मुख्य भूमिका है जबकि अन्य भूमिकाएं सामान्य भूमिका कहलाती है |
4	भूमिका का निर्वाह	प्रत्येक व्यक्ति उसे प्रदान की गयी भूमिका का निर्वाह अपनी योग्यता , क्षमता , रूचि , मनोवृत्ति के आधार पर करता है |
5	भिन्न – भिन्न व्यवहार	भिन्न – भिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करने के लिए भिन्न – भिन्न व्यवहार किया जाता है |
6	गतिशील एवं परिवर्तनशील	भूमिका गतिशील एवं परिवर्तनशील है |
7	अकेली या एकपक्षीय नहीं	समाज में कोई भी भूमिका अकेली या एकपक्षीय नहीं होती | उदाहरण : यदि शिक्षक की भूमिका पढ़ाना है तो छात्र की भूमिका पढ़ना है |

प्रस्थिति एवं भूमिका में अंतर

क्र.	मुख्य बिंदु	प्रस्थिति (पद)	भूमिका (कार्य)
1	परिभाषा	**वीरस्टीड के अनुसार** "प्रस्थिति व्यक्ति का समाज में **पद का सूचक** है |"	**वीरस्टीड के अनुसार** "भूमिका प्रस्थिति से संबंधित कार्यों के निर्वाह से है |"
2	आधार	प्रस्थिति से भूमिका की उत्पत्ति होती है |	भूमिका प्रस्थिति का गतिशील एवं व्यवहारिक पहलू है |
3	निर्वाह	प्रत्येक प्रस्थिति की अनेक भूमिकाएं होती है |	किसी भी भूमिका का अकेले में निर्वाह नहीं किया जा सकता |
4	उदाहरण	शिक्षक	छात्रों को पढ़ाना

प्रस्थिति एवं भूमिका का महत्त्व

- समाज में श्रम विभाजन कर कार्यों को सरल बनाना
- सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना
- सामाजिक नियंत्रण करना
- आचरण एवं व्यवहार करना सिखाना
- जागरूकता एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास

सामाजिक अंत:क्रिया (Social Interaction)

- शाब्दिक अर्थ : सामाजिक संपर्क या अर्थपूर्ण संपर्क या अर्थपूर्ण सम्बन्ध
- जॉर्ज सिमेल : "जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच अर्थपूर्ण संपर्क स्थापित होता है तो उसे सामाजिक अंत:क्रिया कहते है |"
- मैकाइवर व पेज : "दो या दो से अधिक व्यक्तियों के एक दूसरे के संपर्क में आने की प्रक्रिया को सामाजिक अंत:क्रिया कहते है |"

सामाजिक अंत:क्रिया हेतु आवश्यक तत्व

- सामाजिक संपर्क
- संचार

सामाजिक अंत:क्रिया के प्रकार

क्र.	मुख्य बिंदु	प्रत्यक्ष सामाजिक अंत:क्रिया (प्राथमिक संपर्क)	अप्रत्यक्ष सामाजिक अंत:क्रिया (द्वितीयक संपर्क)
1	परिभाषा	जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच अर्थपूर्ण संपर्क प्रत्यक्ष रूप से स्थापित होता है तो उसे प्रत्यक्ष सामाजिक अंत:क्रिया कहते है		जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच अर्थपूर्ण संपर्क अप्रत्यक्ष रूप से स्थापित होता है तो उसे प्रत्यक्ष सामाजिक अंत:क्रिया कहते है	
2	उपनाम	इसे प्राथमिक संपर्क भी कहते है		इसे द्वितीयक संपर्क भी कहते है	
3	घनिष्ठता एवं निकटता	इसमें घनिष्ठता एवं निकटता अधिक पायी जाती है		इसमें घनिष्ठता एवं निकटता कम पायी जाती है	
4	उदाहरण	सामान्य वार्तालाप , सामूहिक चर्चा (Group Discussion)	टेलीफ़ोन , पत्र , तार संचार

संस्कृति (Culture)

संस्कृति शब्द की उत्पत्ति

- शाब्दिक अर्थ - संस्कृति शब्द 'कृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है - विकसित करना या परिष्कृत करना |
- संस्कृति का अंग्रेजी 'कल्चर' लैटिन शब्द "कल्ट या कल्टस" से लिया गया है जिसका अर्थ है – विकसित करना या परिष्कृत करना |

संस्कृति का अर्थ

- मजुमदार व मदान : "लोगों के जीने के ढंग को संस्कृति कहते है |"
- टायलर : "संस्कृति एक जटिल सम्पूर्ण है जिसमें खान – पान , रहन – सहन , रीति – रिवाज , परम्पराएँ , धर्म , कानून , भाषा , कला , संगीत , साहित्य , ज्ञान , विश्वास शामिल है |"

संस्कृति के प्रकार

क्र.	मुख्य बिंदु	भौतिक संस्कृति	अभौतिक संस्कृति
1	परिभाषा	संस्कृति का वह भाग जो मूर्त है जिसे देखा या छुआ जा सकता है	संस्कृति का वह भाग जो अमूर्त है जिसे देखा या छुआ नहीं जा सकता है
2	शामिल	मानव निर्मित सभी वस्तुएं जिसे देखा या छुआ जा सकता है	आचार – विचार जिसे अनुभव किया जा सकता है
3	आवश्यकता	इसका निर्माण मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करता है	नैतिक मूल्यों का विकास
4	स्थायित्व	कम स्थायी एवं अधिक परिवर्तनशील	अधिक स्थायी एवं कम परिवर्तनशील
5	उदाहरण	मशीन , उपकरण , बर्तन , इमारतें , सड़क , पुल , शिल्प वस्तुएं , कलात्मक वस्तुएं , गाड़ियाँ , फर्नीचर , खाद्य पदार्थ , औषधियां	खान – पान , रहन – सहन , रीति – रिवाज , परम्पराएँ , धर्म , कानून , भाषा , कला , संगीत , साहित्य , ज्ञान , विश्वास

संस्कृति की प्रकृति एवं विशेषताएं

- संस्कृति मानव निर्मित है |
- संस्कृति एक सीखा हुआ गुण है |
- संस्कृति संरचित होती है | अर्थात् संस्कृति की अपनी एक संरचना होती है |
- संस्कृति संचारशील है | अर्थात् संस्कृति हस्तांतरित की जाती है |
- संस्कृति गत्यात्मक है | अर्थात् संस्कृति में समय – समय पर बदलाव आते है |
- संस्कृति सदैव समूह के द्वारा वहन की जाती है |
- प्रत्येक समाज की अपनी एक पृथक संस्कृति होती है |
- संस्कृति मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करता है |
- संस्कृति मानव व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक है |
- संस्कृति का वैज्ञानिक विश्लेषण संभव है |

- संस्कृति में अनुकूलन करने की क्षमता होती है |
- संस्कृति भौतिक एवं अभौतिक है | संस्कृति का मूर्त रूप मानव द्वारा निर्मित जैसे कुर्सी , टेबल आदि भौतिक संस्कृति के भाग है , वहीँ धर्म , परम्परा , रीति – रीवाज अभौतिक संस्कृति के भाग है |

संस्कृति का महत्त्व या मानव जीवन पर प्रभाव

- प्रस्थिति एवं भूमिका का निर्धारण
- नैतिकता का निर्माण
- व्यवहारों में एकरूपता
- मानव की आदतों का निर्धारण करती है |
- मानव को मूल्य एवं आदर्श प्रदान करती है |
- व्यक्ति के कार्य का सरलीकरण
- अनुभव एवं कार्यकुशलता बढ़ाती है |
- सामाजिक परिवर्तन में सहायक
- सामाजिक नियंत्रण में सहायक
- सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहायक
- समाज में एकरूपता

संस्कृति एवं सभ्यता में अंतर

क्र.	मुख्य बिंदु	संस्कृति (CULTURE)	सभ्यता (CIVILIZATION)
1	परिभाषा	लोगों के जीने के ढंग को संस्कृति कहते है		जब एक **विस्तृत भू-क्षेत्र** पर संस्कृतियों में समानता पायी जाती है तो उसे सभ्यता कहते है	यह संस्कृति का दीर्घकालीन रूप है	
2	स्थायित्व	कम स्थायी एवं अधिक परिवर्तनशील	अधिक स्थायी एवं कम परिवर्तनशील
3	उदाहरण	कानून , खान –पान , रहन – सहन , रीति – रिवाज , परम्पराएँ , भाषा , कला , संगीत , साहित्य , ज्ञान , विश्वास	सिंधुघाटी सभ्यता , मिस्र सभ्यता , मेसोपोटामिया सभ्यता

व्यक्तित्व (Personality)

व्यक्तित्व शब्द की उत्पत्ति

- शाब्दिक अर्थ - व्यक्ति के गुण
- व्यक्तित्व का अंग्रेजी पर्याय Personality (पर्सोनालिटी) लैटिन भाषा के शब्द परसोना (Persona) से लिया गया है जिसका अर्थ है – 'नकाब' |

व्यक्तित्व का अर्थ

- जॉर्ज सिमेल : "व्यक्तित्व व्यक्ति के शारीरिक , मानसिक , सामाजिक एवं सांस्कृतिक गुणों का योग है |"
- मैकाइवर व पेज : "व्यक्तित्व व्यक्ति के आंतरिक एवं बाह्य गुणों का संयोग है |"
- लेपियर : "व्यक्तित्व उन सभी गुणों की सम्पूर्णता है जो व्यक्ति ने समाजीकरण द्वारा प्राप्त किया है |

व्यक्तित्व की विशेषताएं

- व्यक्तित्व स्थिर गुणों का योग है |
- व्यक्तित्व विभिन्न गुणों की समग्रता है |
- व्यक्तित्व चरित्र , स्वभाव , बुद्धि , ज्ञान , शारीरिक बनावट का योग है |
- प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में समानता व असमानता होती है |
- व्यक्तित्व एक मूल्य तटस्थ अवधारणा है |
- व्यक्तित्व में सीखने की प्रक्रिया सम्मिलित है |

संस्कृति एवं व्यक्तित्व में संबंध

व्यक्ति द्वारा संस्कृति का निर्माण

- व्यक्ति संस्कृति का निर्माण करता है |
- मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संस्कृति का निर्माण करता है |
- व्यक्ति **अभौतिक संस्कृति** खान – पान , रहन – सहन , रीति – रिवाज , परम्पराएँ , धर्म , कानून , भाषा , कला , संगीत , साहित्य , ज्ञान , विश्वास को अपनाता है |
- व्यक्ति ही संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करता है |
- व्यक्ति आविष्कार , नवाचार , पर-संस्कृति ग्रहण द्वारा संस्कृति का संवर्द्धन एवं परिमार्जन करता है |

संस्कृति द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण

- संस्कृति व्यक्तित्व का निर्माण करती है |
- प्रत्येक समाज की अपनी एक पृथक संस्कृति होती है |
- विभिन्न समाजों में पायी जाने वाली सांस्कृतिक भिन्नता , व्यक्तित्व में भिन्नता पैदा करती है |

संस्कृति का व्यक्तित्व पर प्रभाव

- प्रस्थिति एवं भूमिका का निर्धारण
- नैतिकता का निर्माण
- व्यवहारों में एकरूपता
- मानव की आदतों का निर्धारण करती है |
- मानव को मूल्य एवं आदर्श प्रदान करती है |
- व्यक्ति के कार्य का सरलीकरण
- अनुभव एवं कार्यकुशलता बढ़ाती है |
- सामाजिक परिवर्तन में सहायक
- सामाजिक नियंत्रण में सहायक
- सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहायक
- समाज में एकरूपता

मूल्यांकन

- व्यक्ति ही संस्कृति का रचयिता है और संस्कृति ही उसे व्यक्तित्व प्रदान करती है जिसके आधार पर वह संस्कृति की रचना करता है |
- अत: संस्कृति एवं व्यक्तित्व परस्पर पूरक है |

समाजीकरण (Socialization)

- शाब्दिक अर्थ : सीखने की प्रक्रिया
- जॉर्ज सिमेल : "समाजीकरण सीखने की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को सामाजिक भूमिकाओं का निर्वाह करने योग्य बनाती है |"
- न्यूमेयर : "समाजीकरण एक व्यक्ति के सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने की प्रक्रिया है |"
- **सामान्य शब्दों में**
  - प्रत्येक शिशु जन्म के समय मात्र एक जैविक प्राणी होता है |
  - समाज की विशेष संस्कृति से सीखते हुए वह सामाजिक प्राणी बन जाता है |
  - समाज के नियमों को सीखने एवं उसके अनुसार व्यवहार करने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहते है |

समाजीकरण के अभिकरण

- परिवार
- रिश्तेदार
- पड़ोस
- मित्रगण
- शिक्षण संस्थाएं
- व्यावसायिक संगठन

समाजीकरण की विशेषताएं

- सीखने की प्रक्रिया
- आजन्म प्रक्रिया
- व्यक्तित्व का विकास
- संस्कृति को आत्मसात करने की प्रक्रिया
- सांस्कृतिक हस्तांतरण
- व्यक्ति अपनी क्षमताओं का विकास करता है |
- नियमबद्धता एवं अनुशासन का विकास

समाजीकरण की अवस्थाएं या प्रक्रिया

क्र.	अवस्थाएं	विवरण
1	बाल्यावस्था	▪ समाजीकरण की प्रक्रिया का पहला चरण बचपन या बाल्यावस्था है | ▪ इस अवस्था में बच्चें परिवार से मूल्य , विश्वास , मानदंड सीखता है | ▪ विधालय के सम्पर्क में उसकी समाजीकरण की प्रक्रिया तीव्र होती जाती है	
2	किशोरावस्था	▪ समाजीकरण की प्रक्रिया का दूसरा चरण किशोरावस्था है | ▪ इस अवस्था को संक्राति काल कहते है | ▪ इस अवस्था में शिक्षा , आजीविका , विवाह समाधान खोजता है	
3	व्यस्क अवस्था	▪ समाजीकरण की प्रक्रिया का तीसरा चरण व्यस्क अवस्था है | ▪ समाजीकरण की यह अवस्था किशोरावस्था का परिणाम मात्र है | ▪ इस अवस्था में शिक्षा , आजीविका , विवाह को प्राप्त कर लेता है	
4	वृद्धावस्था	▪ समाजीकरण की प्रक्रिया का अंतिम चरण वृद्धावस्था है | ▪ इस अवस्था में समाजीकरण की प्रक्रिया काफ़ी मंद पड़ जाती है | ▪ इस अवस्था में धार्मिक आध्यात्मिक मूल्य काफी प्रभावी होने लगते है	

मूल्यांकन

- इसप्रकार समाजीकरण की प्रक्रिया काफी लम्बी तथा जटिल है |
- समाजीकरण एक आजन्म प्रक्रिया है |

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

Question 1. प्रस्थिति का आशय स्पष्ट कर विवेचना कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)

वीरस्टीड के अनुसार - "प्रस्थिति व्यक्ति का समाज में **पद का सूचक** है |" रॉल्फ लिण्टन के अनुसार - "सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत किसी व्यक्ति को एक समय में जो स्थान प्राप्त होता है उसी को उस व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति कहते है | सामान्य शब्दों में प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पहचान होती है | उसकी एक हैसियत होती है | इसी पहचान या हैसियत को प्रस्थिति कहते है | यह पद व्यक्ति को या तो स्वत: मिलता है या व्यक्ति अपने गुणों या योग्यता के आधार पर समाज में अर्जित करता है | एक व्यक्ति की प्रस्थिति सदैव दूसरे व्यक्ति की तुलना में ही होती है | उदाहरण : शिक्षक – छात्र , पिता – पुत्र , मंत्री , सचिव |

प्रस्थिति के प्रकार : (1) **प्रदत्त प्रस्थिति -** वह प्रस्थिति जो व्यक्ति को जन्म के साथ प्राप्त होती है | इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कोई प्रयास नहीं करना पड़ता है | उदाहरण : धर्म , जाति , गोत्र , लिंग , रिश्तेदारी (2) **अर्जित प्रस्थिति -** वह प्रस्थिति जो व्यक्ति अपनी क्षमता से अर्जित करता है | इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को प्रयास करना पड़ता है | पति – पत्नी , माता – पिता , संपत्ति , व्यवसाय , शिक्षा , विवाह , राजनीतिक पद , नौकरी

प्रस्थिति का महत्त्व : (1) समाज में श्रम विभाजन कर कार्यों को सरल बनाना (2) सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना (3) सामाजिक नियंत्रण करना (4) आचरण एवं व्यवहार करना सिखाना (5) जागरूकता एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास |

Question 2. प्रस्थिति पर संक्षिप्त टिपण्णी कीजिये | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)

वीरस्टीड के अनुसार - "प्रस्थिति व्यक्ति का समाज में पद का सूचक है |" यह पद व्यक्ति को या तो स्वत: मिलता है या व्यक्ति अपने गुणों या योग्यता के आधार पर समाज में अर्जित करता है | उदाहरण : शिक्षक – छात्र , पिता – पुत्र , मंत्री , सचिव | प्रस्थिति के प्रकार : (1) प्रदत्त प्रस्थिति - वह प्रस्थिति जो व्यक्ति को जन्म के साथ प्राप्त होती है | उदाहरण : धर्म , जाति , गोत्र , लिंग (2) अर्जित प्रस्थिति - वह प्रस्थिति जो व्यक्ति अपनी क्षमता से अर्जित करता है | उदाहरण : पति – पत्नी , माता – पिता , संपत्ति , व्यवसाय | प्रस्थिति का महत्त्व : (1) श्रम विभाजन (2) सामाजिक व्यवस्था (3) सामाजिक नियंत्रण (4) आचरण एवं व्यवहार करना सिखाना (5) जागरूकता एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास |

Question 3. भूमिका का आशय स्पष्ट कर विवेचना कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)

वीरस्टीड के अनुसार - "भूमिका प्रस्थिति से संबंधित कार्यों के निर्वाह से है |" इलियट के अनुसार - "भूमिका वह कार्य है जिसे व्यक्ति प्रस्थिति के अनुसार निभाता है |" **सामान्य शब्दों में** प्रस्थिति धारण करने के कारण समाज व्यक्ति से जिस प्रकार के कार्य की अपेक्षा करता है , वहीँ भूमिका कहलाती है | भूमिका प्रस्थिति का गतिशील एवं व्यवहारिक पहलू है | उदाहरण : शिक्षक की भूमिका छात्रों को पढ़ाना , चिकित्सक की भूमिका चिकित्सा

भूमिका के प्रकार : (1) **प्रदत्त भूमिका -** वह भूमिका जो व्यक्ति को जन्म के साथ प्राप्त होती है | इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कोई प्रयास नहीं करना पड़ता है | उदाहरण - गोत्र अनुसार विवाह | (2) **अर्जित भूमिका -** वह भूमिका जो व्यक्ति अपनी क्षमता से अर्जित करता है | इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को प्रयास करना पड़ता है | उदाहरण - छात्रों को पढ़ाना |

भूमिका की विशेषताएं : (1) भूमिका का संबंध प्रस्थति से होता है | (2) भूमिका का निर्धारण संस्कृति एवं सामजिक मानदंडों के आधार पर होता है | (3) प्रत्येक व्यक्ति समाज में अनेक भूमिकाएं निभाता है , किन्तु जिस भूमिका के कारण उसे समाज में पहचान मिलती है वह उसकी मुख्य भूमिका है जबकि अन्य भूमिकाएं सामान्य भूमिका कहलाती है | (4) प्रत्येक व्यक्ति उसे प्रदान की गयी भूमिका का निर्वाह अपनी योग्यता , क्षमता , रूचि , मनोवृत्ति के आधार पर करता है |

(5) भिन्न – भिन्न भूमिकाओं का निर्वाह करने के लिए भिन्न – भिन्न व्यवहार किया जाता है | (6) (7) भूमिका गतिशील एवं परिवर्तनशील है | (8) समाज में कोई भी भूमिका अकेली या एकपक्षीय नहीं होती |

भूमिका का महत्त्व : (1) समाज में श्रम विभाजन कर कार्यों को सरल बनाना (2) सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना (3) सामाजिक नियंत्रण करना (4) आचरण एवं व्यवहार करना सिखाना (5) जागरूकता एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास |

Question 4. भूमिका पर संक्षिप्त टिपण्णी कीजिये | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)

वीरस्टीड के अनुसार - "भूमिका प्रस्थिति से संबंधित कार्यों के निर्वाह से है |" भूमिका प्रस्थिति का गतिशील एवं व्यवहारिक पहलू है | उदाहरण : शिक्षक की भूमिका छात्रों को पढ़ाना | भूमिका के प्रकार : (1) प्रदत्त भूमिका (2) अर्जित भूमिका | भूमिका की विशेषताएं : (1) भूमिका का संबंध प्रस्थति से होता है | (2) भूमिका का निर्धारण संस्कृति एवं सामजिक मानदंडों के आधार पर होता है | भूमिका का महत्त्व : (1) श्रम विभाजन (2) सामाजिक व्यवस्था (3) सामाजिक नियंत्रण (4) आचरण एवं व्यवहार करना सिखाना (5) जागरूकता एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास |

Question 5. प्रस्थिति एवं भूमिका में अंतर स्पष्ट कीजिये | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)

(1) वीरस्टीड के अनुसार - "प्रस्थिति व्यक्ति का समाज में पद का सूचक है जबकि भूमिका प्रस्थिति से संबंधित कार्यों के निर्वाह से है |" प्रस्थिति से भूमिका की उत्पत्ति होती है | (2) प्रस्थिति से भूमिका की उत्पत्ति होती है जबकि भूमिका प्रस्थिति का गतिशील एवं व्यवहारिक पहलू है | (3) प्रत्येक प्रस्थिति की अनेक भूमिकाएं होती है जबकि किसी भी भूमिका का अकेले में निर्वाह नहीं किया जा सकता | (4) उदाहरण : शिक्षक की भूमिका छात्रों को पढ़ाना , चिकित्सक की भूमिका चिकित्सा

Question 6. सामाजिक अंत:क्रिया का आशय स्पष्ट कर विवेचना कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)

शाब्दिक अर्थ : सामाजिक संपर्क या अर्थपूर्ण संपर्क या अर्थपूर्ण सम्बन्ध | जॉर्ज सिमेल के अनुसार - "जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच अर्थपूर्ण संपर्क स्थापित होता है तो उसे सामाजिक अंत:क्रिया कहते है |" मैकाइवर व पेज के अनुसार - "दो या दो से अधिक व्यक्तियों के एक दूसरे के संपर्क में आने की प्रक्रिया को सामाजिक अंत:क्रिया कहते है |"

आवश्यक तत्व : (1) सामाजिक संपर्क (2) संचार

सामाजिक अंत:क्रिया के प्रकार : (1) **प्रत्यक्ष सामाजिक अंत:क्रिया (प्राथमिक संपर्क)** - जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच अर्थपूर्ण संपर्क प्रत्यक्ष रूप से स्थापित होता है तो उसे प्रत्यक्ष सामाजिक अंत:क्रिया कहते है | इसे प्राथमिक संपर्क भी कहते है | इसमें घनिष्ठता एवं निकटता अधिक पायी जाती है | उदाहरण : सामान्य वार्तालाप , सामूहिक चर्चा (2) **अप्रत्यक्ष सामाजिक अंत:क्रिया (द्वितीयक संपर्क)** - जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच अर्थपूर्ण संपर्क अप्रत्यक्ष रूप से स्थापित होता है तो उसे प्रत्यक्ष सामाजिक अंत:क्रिया कहते है | इसे द्वितीयक संपर्क भी कहते है | इसमें घनिष्ठता एवं निकटता कम पायी जाती है | उदाहरण : टेलीफ़ोन , पत्र , तार संचार |

Question 7. संस्कृति का आशय स्पष्ट कर विवेचना कीजिये | (अंक : 20 , शब्द सीमा : 250)

शाब्दिक अर्थ - संस्कृति शब्द 'कृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है - विकसित करना या परिष्कृत करना | संस्कृति का अंग्रेजी 'कल्चर' लैटिन शब्द "कल्ट या कल्टस" से लिया गया है जिसका अर्थ है – विकसित करना या परिष्कृत करना | मजुमदार व मदान के अनुसार - "लोगों के जीने के ढंग को संस्कृति कहते है |" टायलर के अनुसार - "संस्कृति एक जटिल सम्पूर्ण है जिसमें खान –पान , रहन – सहन , रीति – रिवाज , परम्पराएँ , भाषा , कला , संगीत , साहित्य , ज्ञान , विश्वास शामिल है |"

संस्कृति के प्रकार : (1) **भौतिक संस्कृति** - संस्कृति का वह भाग जो मूर्त है जिसे देखा या छुआ जा सकता है | मानव निर्मित सभी वस्तुएं जिसे देखा या छुआ जा सकता है | इसका निर्माण मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करता है | यह कम स्थायी एवं अधिक परिवर्तनशील है | उदाहरण : मशीन , उपकरण , बर्तन , इमारतें , सड़क , पुल , शिल्प वस्तुएं , कलात्मक वस्तुएं , गाड़ियाँ , फर्नीचर , खाद्य पदार्थ , औषधियां (2) **अभौतिक संस्कृति** - संस्कृति का वह भाग जो अमूर्त है जिसे देखा या छुआ नहीं जा सकता है | आचार – विचार जिसे अनुभव किया जा सकता है | यह नैतिक मूल्यों का विकास करता है | यह अधिक स्थायी एवं कम परिवर्तनशील है | उदाहरण : कानून , खान –पान , रहन – सहन , रीति – रिवाज , परम्पराएँ , भाषा , कला , संगीत , साहित्य , ज्ञान , विश्वास

संस्कृति की प्रकृति एवं विशेषताएं : (1) संस्कृति मानव निर्मित है | (2) संस्कृति एक सीखा हुआ गुण है | (3) संस्कृति संरचित होती है | (4) संस्कृति संचारशील है | (5) संस्कृति गत्यात्मक है | (6) संस्कृति सदैव समूह के द्वारा वहन की जाती है | (7) प्रत्येक समाज की अपनी एक पृथक संस्कृति होती है | (8) संस्कृति मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करता है | (9) संस्कृति मानव व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक है | (10) संस्कृति का वैज्ञानिक विश्लेषण संभव है | (11) संस्कृति में अनुकूलन करने की क्षमता होती है |

संस्कृति का महत्त्व : (1) प्रस्थिति एवं भूमिका का निर्धारण (2) नैतिकता का निर्माण (3) व्यवहारों में एकरूपता (4) मानव की आदतों का निर्धारण करती है | (5) मानव को मूल्य एवं आदर्श प्रदान करती है | (6) व्यक्ति के कार्य का सरलीकरण (7) अनुभव एवं कार्यकुशलता बढ़ाती है | (8) सामाजिक परिवर्तन में सहायक (9) सामाजिक नियंत्रण में सहायक (10) सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहायक (11) समाज में एकरूपता

Question 8. संस्कृति एवं सभ्यता में अंतर स्पष्ट कीजिये | (अंक : 2 , शब्द सीमा : 30)

(1) लोगों के जीने के ढंग को संस्कृति कहते है जबकि जब एक विस्तृत भू-क्षेत्र पर संस्कृतियों में समानता पायी जाती है तो उसे सभ्यता कहते है | यह संस्कृति का दीर्घकालीन रूप है | (2) संस्कृति कम स्थायी एवं अधिक परिवर्तनशील होता है जबकि सभ्यता अधिक स्थायी एवं कम परिवर्तनशील होता है | (3) कानून , खान –पान , रहन – सहन , रीति – रिवाज , परम्पराएँ , भाषा , कला , संगीत , साहित्य , ज्ञान , विश्वास आदि संस्कृति है जबकि सिंधुघाटी सभ्यता , मिस्र सभ्यता , मेसोपोटामिया सभ्यता आदि सभ्यता है |

Question 9. व्यक्तित्व का आशय स्पष्ट कर विवेचना कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)

व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ - व्यक्ति के गुण | व्यक्तित्व का अंग्रेजी पर्याय Personality (पर्सोनालिटी) लैटिन भाषा के शब्द परसोना (Persona) से लिया गया है जिसका अर्थ है – 'नकाब' | जॉर्ज सिमेल अनुसार - "व्यक्तित्व व्यक्ति के शारीरिक , मानसिक , सामाजिक एवं सांस्कृतिक गुणों का योग है |" मैकाइवर व पेज अनुसार - "व्यक्तित्व व्यक्ति के आंतरिक एवं बाह्य गुणों का संयोग है |" लेपियर के अनुसार - "व्यक्तित्व उन सभी गुणों की सम्पूर्णता है जो व्यक्ति ने समाजीकरण द्वारा प्राप्त किया है |

व्यक्तित्व की विशेषताएं : (1) व्यक्तित्व स्थिर गुणों का योग है | (2) व्यक्तित्व विभिन्न गुणों की समग्रता है | (3) व्यक्तित्व चरित्र , स्वभाव , बुद्धि , ज्ञान , शारीरिक बनावट का योग है | (4) प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में समानता व असमानता होती है | (5) व्यक्तित्व एक मूल्य तटस्थ अवधारणा है | (6) व्यक्तित्व में सीखने की प्रक्रिया सम्मिलित है |

Question 10. संस्कृति एवं व्यक्तित्व में संबंध स्थापित कीजिये | (अंक : 8 , शब्द सीमा : 100)

व्यक्ति द्वारा संस्कृति का निर्माण - व्यक्ति संस्कृति का निर्माण करता है | मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संस्कृति का निर्माण करता है | व्यक्ति **अभौतिक संस्कृति** खान – पान , रहन – सहन , रीति – रिवाज , परम्पराएँ , धर्म , कानून , भाषा , कला , संगीत , साहित्य , ज्ञान , विश्वास को अपनाता है | व्यक्ति ही संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित करता है | व्यक्ति आविष्कार , नवाचार , पर-संस्कृति ग्रहण द्वारा संस्कृति का संवर्द्धन एवं परिमार्जन करता है |

संस्कृति द्वारा व्यक्तित्व का निर्माण - संस्कृति व्यक्तित्व का निर्माण करती है | प्रत्येक समाज की अपनी एक पृथक संस्कृति होती है | विभिन्न समाजों में पायी जाने वाली सांस्कृतिक भिन्नता , व्यक्तित्व में भिन्नता पैदा करती है |

संस्कृति का व्यक्तित्व पर प्रभाव - (1) प्रस्थिति एवं भूमिका का निर्धारण (2) नैतिकता का निर्माण (3) व्यवहारों में एकरूपता (4) मानव की आदतों का निर्धारण करती है | (5) मानव को मूल्य एवं आदर्श प्रदान करती है | (6) व्यक्ति के कार्य का सरलीकरण (7) अनुभव एवं कार्यकुशलता बढ़ाती है | (8) सामाजिक परिवर्तन में सहायक (9) सामाजिक नियंत्रण में सहायक (10) सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहायक (11) समाज में एकरूपता

मूल्यांकन : व्यक्ति ही संस्कृति का रचयिता है और संस्कृति ही उसे व्यक्तित्व प्रदान करती है जिसके आधार पर वह संस्कृति की रचना करता है | अत: संस्कृति एवं व्यक्तित्व परस्पर पूरक है |

Question 11. समाजीकरण का आशय स्पष्ट कर विवेचना कीजिये | (अंक : 20 , शब्द सीमा : 250)

समाजीकरण का शाब्दिक अर्थ - सीखने की प्रक्रिया | जॉर्ज सिमेल अनुसार - "समाजीकरण सीखने की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को सामाजिक भूमिकाओं का निर्वाह करने योग्य बनाती है |" न्यूमेयर अनुसार - "समाजीकरण एक व्यक्ति के सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने की प्रक्रिया है |" सामान्य शब्दों में प्रत्येक शिशु जन्म के समय मात्र एक जैविक प्राणी होता है | समाज की विशेष संस्कृति से सीखते हुए वह सामाजिक प्राणी बन जाता है | समाज के नियमों को सीखने एवं उसके अनुसार व्यवहार करने की इस प्रक्रिया को समाजीकरण कहते है |

समाजीकरण के अभिकरण : (1) परिवार (2) रिश्तेदार (3) पड़ोस (4) मित्रगण (5) शिक्षण संस्थाएं (6) व्यावसायिक संगठन

समाजीकरण की विशेषताएं : (1) सीखने की प्रक्रिया (2) आजन्म प्रक्रिया (3) व्यक्तित्व का विकास (4) संस्कृति को आत्मसात करने की प्रक्रिया (5) सांस्कृतिक हस्तांतरण (6) व्यक्ति अपनी क्षमताओं का विकास करता है | (7) नियमबद्धता एवं अनुशासन का विकास

समाजीकरण की अवस्थाएं या प्रक्रिया : (1) बाल्यावस्था - समाजीकरण की प्रक्रिया का पहला चरण बचपन या बाल्यावस्था है | इस अवस्था में बच्चें परिवार से मूल्य , विश्वास , मानदंड सीखता है | विधालय के सम्पर्क में उसकी समाजीकरण की प्रक्रिया तीव्र होती जाती है | (2) किशोरावस्था - समाजीकरण की प्रक्रिया का दूसरा चरण किशोरावस्था है | इस अवस्था को संक्राति काल कहते है | इस अवस्था में शिक्षा , आजीविका , विवाह समाधान खोजता है | (3) व्यस्क अवस्था - समाजीकरण की प्रक्रिया का तीसरा चरण व्यस्क अवस्था है | समाजीकरण की यह अवस्था किशोरावस्था का परिणाम मात्र है | इस अवस्था में शिक्षा , आजीविका , विवाह को प्राप्त कर लेता है | (4) वृद्धावस्था - समाजीकरण की प्रक्रिया का अंतिम चरण वृद्धावस्था है | इस अवस्था में समाजीकरण की प्रक्रिया काफ़ी मंद पड़ जाती है | इस अवस्था में धार्मिक आध्यात्मिक मूल्य काफी प्रभावी होने लगते है |

मूल्यांकन : इसप्रकार समाजीकरण की प्रक्रिया काफी लम्बी तथा जटिल है | समाजीकरण एक आजन्म प्रक्रिया है |

RAKESH SAO

CSE (BIT , Durg)

DIRECTOR (PSC ACADEMY)

PSC ACADEMY

(BILASPUR)

2016 SELECTIONS

NISHANT TIWARI
CGPSC 2016
7TH POST RANK

PUNESHWAR VERMA
STATE ENGG SERVICES
2ND RANK

CHANDRAKANT BAGHEL
FOOD INSPECTOR
10TH RANK

SURESH PIPRE
ACF 2016
3RD RANK (CAT)

NEW BATCHES START FROM 2ND APRIL

CGPSC PRE TIME - 7AM TO 10AM

CGPSC PRE TIME - 5:30PM TO 8:30PM

DOWNLOAD ALL STUDY MATERIALS FROM
WWW.PSCACADEMY.IN

2ND FLOOR, CHATURVEDI ARYAVEER PORT,
IN FRONT OF SHIMLA TENT HOUSE,
DYALBAND ROAD, GANDHI CHOWK,
BILASPUR

CONTACT 9827112187
9302766733

RAKESH SAO
CSE (BIT , Durg)
DIRECTOR

www.e-prepation.com

PSC ACADEMY

(RAIPUR)

2016 SELECTIONS

NISHANT TIWARI
CGPSC 2016
7TH POST RANK

PUNESHWAR VERMA
STATE ENGG SERVICES
2ND RANK

CHANDRAKANT BAGHEL
FOOD INSPECTOR
10TH RANK

SURESH PIPRE
ACF 2016
3RD RANK (CAT)

NEW BATCHES START FROM 26TH MARCH

CGPSC PRE TIME - 7AM TO 10AM

CGPSC PRE TIME - 5:30PM TO 8:30PM

DOWNLOAD ALL STUDY MATERIALS FROM
WWW.PSCACADEMY.IN

PSC ACADEMY
BESIDE DENA BANK, GOL CHOWK,
ROHANIPURAM, D.D. NAGAR,
NEAR NIT RAIPUR, RAIPUR (C.G.)

CONTACT 9827112187
9302766733

RAKESH SAO
CSE (BIT , Durg)
DIRECTOR

www.e-prepation.com

FOR COMPLETE NOTES VISIT

WWW.PSCACADEMY.IN

STEPS TO DOWNLOAD PDF NOTES

(1) www.pscacademy.in

(2) CLICK ON "DOWNLOAD"

(3) CLICK ON "PSC ACADEMY